राजस्थान के प्रमुख वन्य जीव

स्तनपायी, पक्षी, सरीसृप, उभयचारी एवं मत्स्य

jkd:'k 0;kl
204, वाशलेग मेनोर
रूस्तम बाग मेन रोड़
मनीपाल अस्पताल के पास
बैंगलुरु – 560 017 (राज.)

साईन्टिफिक पब्लिशर्स

i:dk'kd

lkbafVfQd ifCy'klZ ¼bafM;k½
5–ए, न्यू पाली रोड़, पो.बॉ. नं. 91
जोधपुर – 342 001
टेलिफोन – 0291 2433323
फैक्स – 0291 2624154
E-mail: info@scientificpub.com

lkbafVfQd ifCy'klZ ¼bafM;k½
4806/24, अंसारी रोड़,
दरियागंज
नई दिल्ली – 110 002 (भारत)

© 2016, व्यास राकेश

ISBN: 978-81-7233-977-7
eISBN: 978-93-87307-66-7

eq[; Nk;k fp=dkj – सुनील सिंघल, रवीन्द्र सिंह तोमर, निरंजन संत, शरद अग्रवाल, राजीव तोमर, पी.एम. लाड, अंसार खान, देवेन्द्र भारद्वाज, योगेश जांगिड़, देवेन्द्र सिंह केवलादेव रिक्सा गाइड, छोटू खान, जुगल किशोर तिवारी, रिमल, राकेश व्यास, सुरेन्द्र सिंह चौहान और मनीष आर्य (मुखपृष्ठ)

'छायाचित्र के सर्वाधिकार छाया चित्रकार के पास सुरक्षित

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना माइक्रो फिल्म, फोटोस्टेट या अन्य किसी भी प्रकार से प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

भारत में मुद्रित

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

मुख्यमंत्री राजस्थान

संदेश

राजस्थान के स्थापत्य, इतिहास और संस्कृति की बहुरंगी छटा के साथ यहां की प्राकृतिक और वन्य संपदा तथा अप्रवासी पंछियों की शरणस्थल बनीं दलदली झीलें भी हमारी धरोहर हैं।

राज्य की जैव विविधता और वन्यजीव, हमारे शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के परिचायक हैं। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम आदि के निर्धारित मानदण्डों को राजस्थान परम्पराओं में पालता आया है।

पर्यावरण और प्रकृति संरक्षण की दृष्टि से वन्य जीव और उनकी सुरक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है। अक्सर देखा गया है कि वन्य पशु–पक्षी हमारे आकर्षण के पात्र तो होते हैं किन्तु इनके बारे में सही जानकारी और इनके संरक्षण के प्रति जागरूकता का अभाव रहता है। वन्य जीव–जंतुओं की जानकारी अधिकतर अंग्रेजी की पुस्तकों में होती है जिससे हिन्दी भाषी पाठक इनसे वंचित रहते हैं।

आशा है, "राजस्थान के प्रमुख वन्य–जीव" शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक पर्यटकों, पर्यावरणविदों और आम पाठकों के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होगी। इससे आम लोगों को सरल भाषा में वन्य जीवों के प्रकार, व्यवहार, आहार, प्रजनन और संरक्षण की जानकारी मिल सकेगी और इससे वे इनके संरक्षण के प्रति और अधिक जागरूक होंगे। शुभकामनाओं सहित।

वसुन्धरा राजे

(वसुन्धरा राजे)

çkDdFku

यह हकीकत है कि पृथ्वी एक बहुत बड़ी मुसीबत की ओर अग्रसर है और हम "छठे सामूहिक विलोपन" की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। हाल ही में विश्वभर के विशेषज्ञों द्वारा 5487 स्थलीय प्राणियों के संरक्षण की स्थिति का अवलोकन करने पर यह गंभीर समस्या सामने आई है कि 20 प्रतिशत से अधिक प्रजातियाँ निकट भविष्य में लुप्त होने के कगार पर है। पक्षी, मत्स्य, उभयचर प्राणियों व अनेक अन्य प्रजातियों की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं है। वर्ष 2050 तक संभवतया 30 से 50 प्रतिशत प्रजातियाँ के लुप्त होने का अंदेशा है। प्रकृति में प्रजातियों का विलुप्त होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है परन्तु गत शताब्दी में मानवजनित कृत्यों के कारण विलुप्त होने की प्रक्रिया में 1000 गुना वृद्धि हुई है। वर्ष 1996–2008 के मध्य किए गये विशेष शोध प्रयासों, अभ्यारण्यों के समुचित वैज्ञानिक प्रबंधन, प्रजातियों के उनके प्राकृतिक वातावरण में पुनर्स्थापन (रिइंट्रोडक्शन) और कैप्टिव ब्रीडिंग (सुरक्षित वातावरण में प्रजनन) आदि से मात्र 28 प्रजातियों की आबादी में वृद्धि हुई है। इस तरह संकटापन्न प्रजातियों का संरक्षण एवं उनके प्राकृतिक आवास की सुरक्षा एक अति कठिन कार्य साबित हो रहा है।

भारत वर्ष का भौगोलिक क्षेत्र विश्व का मात्र 2.4 प्रतिशत है। उपलब्ध प्रजातियों की संख्या एवं संवृद्धि के आधार पर अत्यधिक जैविक विविधता वाले 12 देशों में भारत एक अग्रणी देश है। विश्व की जैव–विविधता के संरक्षण में भारत की अहम भागीदारी और जिम्मेदारी है। भारत को जैव–विविधता एवं वातावरण की परिस्थितियों के आधार पर 10 क्षेत्रों में बांटा गया है। राजस्थान राज्य में अर्द्धशुष्क एवं शुष्क क्षेत्र प्रमुख रूप से विद्यमान हैं। इस क्षेत्र में कम वर्षा होना तथा समय–समय पर अकाल का प्रकोप भी मुख्य कारण है। शुष्क क्षेत्र में पाई जाने वाली प्रजातियों ने अपनी जीवन शैली को पानी की कम मात्रा में उपलब्धता के अनुरूप परिवर्तित किया है। इन प्रजातियों का विकास होने में हजारों वर्ष का समय लगा तथा इसमें से कुछ प्रजातियाँ या तो पूर्णतः विलुप्त हो गई हैं या उसी दिशा में अग्रसर है। यदि इस क्षेत्र में उपलब्ध प्रजातियों को विलुप्त होने से बचाना है तो उन्हें विस्तृत रूप से समझना अति आवश्यक है। प्रजातियों का संरक्षण इस क्षेत्र के निवासी समुदाय की समझ, सहयोग एवं साझेदारी से ही किया जाना सम्भव है।

वन्यजीव प्रेमी समुदाय, आम नागरिक, विद्यार्थी, वनकर्मी, संरक्षण से जुड़ी संस्थाएं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को इस क्षेत्र में पाई जाने वाली अनेक प्रजातियों के बारे में एक ही जगह जानकारी उपलब्ध कराने के

उद्देश्य से राकेश व्यास द्वारा अथक प्रयास कर "राजस्थान के प्रमुख वन्य जीव" पुस्तक का लेखन किया गया है। इस पुस्तिका में राजस्थान के जैव–विविधता के विशेष क्षेत्र, स्थानीय समाज से जुड़ी सामाजिक परम्पराओं जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों का संग्रहण किया गया है। विभिन्न स्रोतों से जानकारी के आधार पर राजस्थान राज्य में उपलब्ध लगभग 87 में से 55 प्रमुख स्तनपायी प्राणियों का, 480 में से 325 पक्षियों का, 67 में से 50 सरीसृपों का, 30 में से 14 उभयचारी जीवों का और 114 में से अतिमहत्त्वपूर्ण 14 मछलियों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

राकेश व्यास द्वारा राजस्थान के लगभग सभी क्षेत्रों का बृहत रूप से भ्रमण कर वहां पाये जाने वाले वन्यजीवों और वहाँ की वन्य जीव संरक्षण की स्थिति का गहन अध्ययन किया गया है। वे इस क्षेत्र के इतिहास, सामाजिक–परिस्थिति, स्थानीय समुदाय के संरक्षण–मूल्यों को पहचानते हैं। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक राजस्थान की जैव–विविधता के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराने में एवं वन्यजीव संरक्षण के संबंध में जागरूकता लाने में सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक की सफलता के लिये मेरी शुभकामनायें।

th- fo'oukFk jìh
भारतीय वन सेवा
अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक
और मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक
जयपुर

/kU;okn

इस पुस्तक को पाठकों तक पहुँचाने में अनेक सहृदय प्रकृति प्रेमी व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ और मैं उन सभी का इस माध्यम से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। श्री भरत सिंह और श्री पी.एम. लाड जैसे वरिष्ठ प्रकृतिविद सज्जनों का प्रोत्साहन और उनके सुझाव मुझे सदा ही प्राप्त रहे हैं और मैं उसके लिये उनका आभारी हूँ। वन्यजीव संरक्षण और अध्ययन के कार्यों में मेरा साथ देने के लिये सुनील सिंघल, रविन्द्रसिंह तोमर, राजीव तोमर, मनीष आर्य, मनमोहन झा, डॉ. हिम्मत सिंह, राजीव कपूर और अपने अनेक सहयोगियों को जितना भी धन्यवाद दूँ वह कम है। डॉ. सतीश शर्मा और भोलूजी के उपयोगी सुझाव मुझे हमेशा मिलते रहे जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। कछुओं की पहचान करने में निखिल व्हिटेकर ने सराहनीय सहयोग दिया, जिसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

डा. जी.वी. रेड्डी ने इस पुस्तक के लिये प्राक्कथन लिखने का और इस प्रयास को प्रोत्साहन देने का जो कार्य किया है उसके लिये में हृदय की गहराई से आभारी हूँ। श्री अरिजीत बनर्जी का उनके हर प्रकार के सहयोग के लिये मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरे सभी वन्यजीव प्रेमी साथी और छायाचित्रकार धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने मुझे उनके छायाचित्र उपयोग करने की अनुमति दी। इनमें श्री सुनील सिंघल, रवीन्द्रसिंह तोमर, पी.एम. लाड, निरंजन संत, शरद अग्रवाल, राजीव तोमर, अंसार खान, मनीष आर्य, देवेन्द्र भारद्वाज, जुगल किशोर तिवारी, योगेश जांगिड़ देवेन्द्र सिंह, सुरेन्द्रसिंह चौहान, केवलादेव, रिमल और छोटू खान का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ क्योंकि इनके सहयोग के बिना इतने विस्तृत रूप से चित्रित पुस्तक पाठकों तक पहुँचाना संभव नहीं था।

श्री तनय शर्मा और राजेश ओझा, साइंटिफिक पब्लिशर्स (इंडिया), जोधपुर का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को पाठकों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी बखूबी निभाई, उनकी इच्छाशक्ति और प्रयास के बिना यह पुस्तक पाठकों तक पहुंचना कतिपय असम्भव था। मुखपृष्ठ के छायाचित्र के लिए मैं मनीष आर्य का विशेष रूप से आभारी हूँ।

jkd'k 0;kl

vuØef.kdk

	प्रस्तावना	xi
1	राजस्थान का जैव–भूगोल और जैविक विविधता	1
2	प्रकृति और वन्यजीव पर्यटन	4
3	राजस्थान में प्रकृति और वन्यजीव पर्यटन के लिये महत्वपूर्ण क्षेत्र	6
4	राजस्थान की प्रकृति संरक्षण परम्परा	11
5	स्तनपायी	13
6	पक्षी	42
7	सरीसृप	187
8	उभयचारी	216
9	मत्स्य	222
10	सूची, सामान्य नाम	227
11	सन्दर्भ ग्रन्थ	237

çLrkouk

राजस्थान के हिन्दी पाठकों के लिये वन्यजीवों की समुचित सचित्र जानकारी के साथ कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इस कमी को पूरा करने के लिये मैंने इस पुस्तक को लिखने का विचार बनाया और मेरे इस विचार पर प्रकाशक ने सहमति व्यक्त की, जिसके कारण हम यह पुस्तक पाठक तक पहुंचा पायें। राजस्थान के प्रमुख वन्यजीवों के बारे में उपलब्ध जानकारी को सुरुचिपूर्ण रूप से प्रस्तुत करना और उनकी सही पहचान के लिये जहाँ तक सम्भव हो उनके छायाचित्र देना मेरा ध्येय है। इससे वन्यजीव प्रेमी, विद्यार्थी, पर्यटक और वनकर्मियों को राजस्थान में पाये जाने वाले प्रमुख स्तनपायी, पक्षी, सरीसृप, उभयचारी और मत्स्य श्रेणी के जीवों को पहचानने में सहायता मिलेगी, उनके आचार–व्यवहार के सम्बन्ध में और उनके संरक्षण महत्व के बारे में जानकारी मिलेगी। इस पुस्तक में अधिकांश उन वन्यजीवों के बारे में जानकारी दी गई है जिनका संरक्षण महत्व अधिक है, वे दुर्लभ या स्थानिक हैं तथा वे जिनकी सामान्य रूप से देखे जाने की सम्भावनायें अधिक हैं। मत्स्य वर्ग को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अन्तर्गत सुरक्षा प्राप्त नहीं है पर स्थानिक और देशज मत्स्य प्रजातियाँ जिन्हें संरक्षण की आवश्यकता है, उनका विवरण इस पुस्तक में दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग 55 स्तनपायी, 325 पक्षी, 60 सरीसृप, 10 उभयचारी और 15 मत्स्य वर्ग के प्राणियों का विवरण दिया गया है। पाठकों की सुविधा के लिये वन्यजीवों का विवरण उनके आकार, पहचान चिन्ह, व्यवहार, प्रजनन और संरक्षण महत्व शीर्षकों के अन्तर्गत दिया गया है।

वन्यजीवों के प्रति प्रेम, उनके बारे में जानने की उत्सुकता ही पर्यावरण और प्रकृति संरक्षण के प्रति उठाये गये पहले कदम हैं। तितलियाँ, शलभ, पक्षी, पुष्प आदि सर्वप्रथम हमें आकर्षित करते हैं और इन्हें देखने के लिये हमें केवल अपने वातावरण के प्रति जागरूक होना आवश्यक है। यदि हम अपने आस–पास देखने की आदत विकसित कर लें तो वन्यजीवों को देखने के लिये बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। वे हमारे साथ शहरों और गावों में रहते हैं। अनेक प्रकार की तितलियाँ, पक्षी, सरीसृप और उभयचारी हमारे आस–पास देखे जा सकते हैं, मात्र आवश्यकता है तो रुचि और दृष्टि की। यदि हम इनके बारे में सही जानकारी रखेंगे तो हम अनेक दुर्घटनाओं से बच सकते हैं और ये जीव भी हमारे साथ शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व में रह सकते हैं। उदाहरण के तौर पर सर्पों के बारे में सही जानकारी जहाँ एक ओर हमारी जान बचाने में सहायक हो सकती है तो यह अनेक विषहीन सर्पों को मारे जाने से बचाने में भी सहायक हो सकती है, क्योंकि अधिकांश

सर्प इसी जानकारी के अभाव में मार दिये जाते हैं। इसी प्रकार वन्यजीवों की आदतों और उनकी जीवनचर्या व गतिविधि के बारे में आम पाठक की चेतना इनके संरक्षण में भी सहायक होगी। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अनुसार कौनसे जीव किस श्रेणी में रखे गये हैं, यह जानकारी वनकर्मियों के लिये विशेष रूप से उपयोगी होगी।

राजस्थान की जैविक विविधता और वन्यजीव पर्यटन के महत्व को देखते हुए, इन विषयों पर आलेख और संरक्षित और असंरक्षित वन्य जीव महत्व के स्थानों की सूची भी इस पुस्तक में दी जा रही है जो कि पर्यटकों और विद्यार्थियों के लिये विशष रूप से उपयोगी होगी।

jkd'k 0;kl

1. रीसस मकाक

2 नार्दर्न प्लेन्स ग्रे लंगूर

3. सांबर

4. स्पाटेड डीअर

5. ब्लैक बक (नर, मादा और बच्चा)

SAMPLE

प्लेट - 2 स्तनपायी

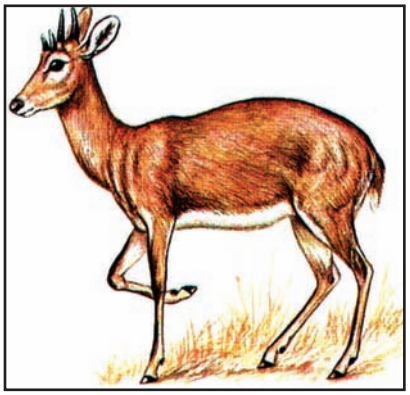

6. फ़ोर-होर्न्ड एन्टीलोप

7. नीलगाय (नर)

8. इंडियन गज़ेल

9. वाईल्ड बोअर

10. स्लाथ बेअर

11. गोल्डन जैकाल

SAMPLE

स्तनपायी

प्लेट - 3

12. ग्रे वुल्फ

13. वाईल्ड डोग

14. बंगाल फौक्स

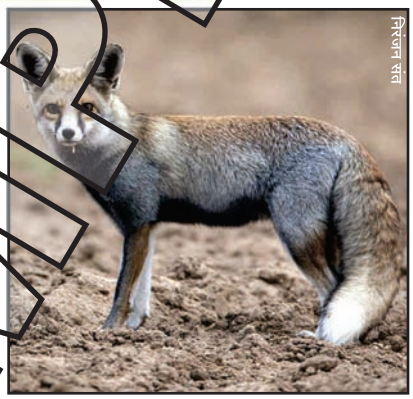

15. इंडियन डेजर्ट फौक्स

16. स्ट्राइप्ड हायना

17. बंगाल टाईगर

SAMPLE

प्लेट - 4 स्तनपायी

18. लेपर्ड

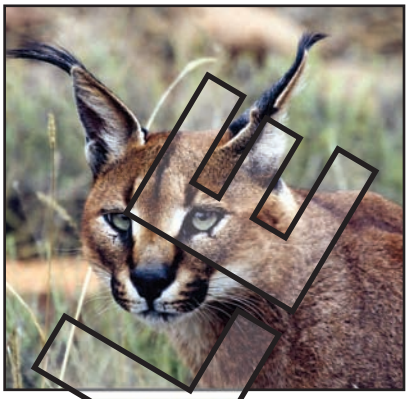

19. कैराकल

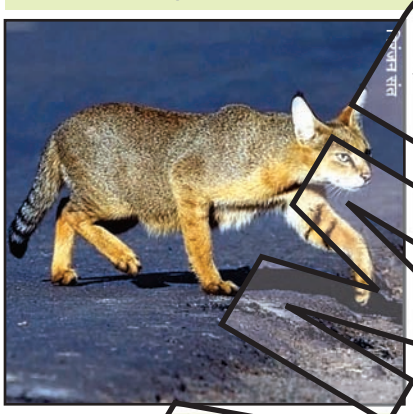

20. जंगल कैट

21. डेजर्ट कैट

22. फिशिंग कैट

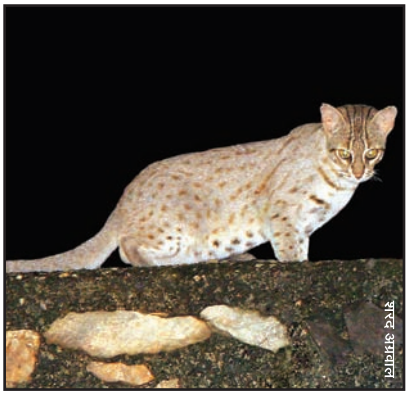

23. रस्टी स्पाटड कैट

SAMPLE

स्तनपायी

प्लेट - 5

24. हनी बैजर/रैटल

25. स्मूथ-कोटेड ओटर

26. स्मॉल इंडियन सिवट

27. कौमन पाम सिवेट

28. इंडियन ग्रे मंगूज

29. रड्डी मंगूज

SAMPLE

प्लेट - 6 स्तनपायी

30. स्माल इंडियन मंगूज

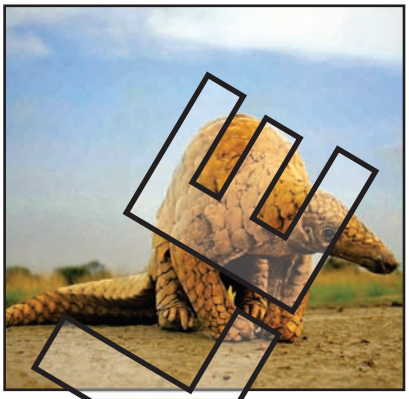

31. थिक-टेल्ड पेंगोलिन

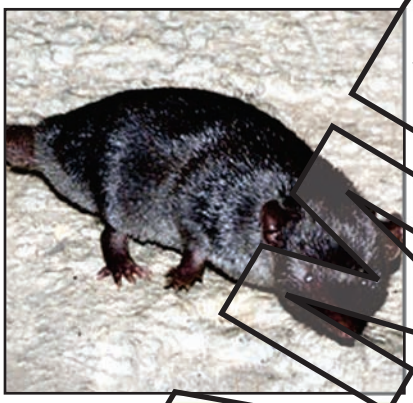

32. ग्रे रस्क श्रू (हाऊस श्रू)

33. लौंग-इअर्ड हेजहौग

34. पेल हेजहौग

35. इंडियन जायंट फ्लाइंग स्क्विरल

SAMPLE

36. नादर्न पाम स्क्विरल

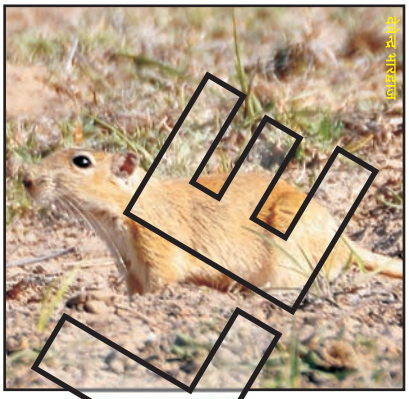

37. इंडियन डेजर्ट जर्बिल

38. सैंड-कलर्ड मेटाड

39. इंडियन बुश रैट

40. इंडियन क्रेस्टेड पोर्कूपाईन

41. इंडियन हेअर

SAMPLE

प्लेट - 8 स्तनपायी

42. इंडियन फ्लाईंग फाक्स

43. फल्वस फ्रुट बैट

44. शार्ट-नोज्ड फ्रूट बैट

45. ग्रेटर माऊस-टेल्ड बैट

46. इंडियन पिपिस्ट्रेल

47. पेन्टेड बैट

48. ग्रेटर फाल्स वैम्पायर बैट

49. गंगा रिवर डाल्फिन

SAMPLE